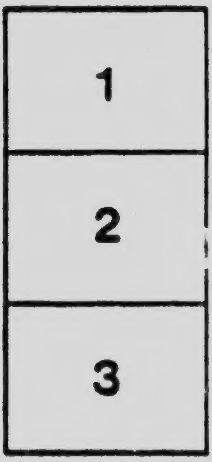
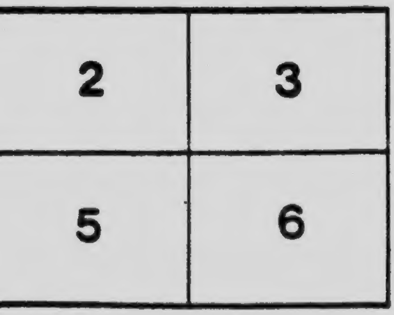

3


1
2
3


2
3
5
6

हिन्दी की
पहिला प्रश्नोत्तर ।

FIRST CATECHISM
IN HINDI.

Published by the Canadian Mission.

Printed at the Canadian Mission Press.

Tunapuna *1908* *Trinidad.*

2 nd Edition] *Price 1 ct.* *[1000 Copies.*

THE LORD'S PRAYER.

Our Father which art in heaven,
Hollowed be thy name.
Thy kingdom come.
Thy will be done in earth, as it
is in heaven.
Give us this day our daily bread.
And forgive us our debts,
as we forgive our debtors.
And lead us not into temptation,
but deliver us from evil.
For thine is the kingdom,
and the power, and the glory,
for ever. Amen.

पहिला प्रश्नोत्तर ॥

परमेश्वर के विषय में ।

१ प्रश्न—किसने तुम को पैदा किया ।

उत्तर— परमेश्वर ने मुझ को और सब कुछ पैदा किया ।

२ प्र: कौन पुस्तक परमेश्वर के विषय में हमें सिखलाता है

उ: बैबल अर्थात धर्म्मपुस्तक परमेश्वर के विषय में हमें सिखलाता है ॥

३ प्र: धर्म्मपुस्तक किस का वचन है ।

उ: धर्म्म पुस्तक परमेश्वर का वचन है ।

४ प्र: परमेश्वर कहां है ।

उ: परमेश्वर सर्व्वत्र है ।

५ प्र: किस लिये हम परमेश्वर को नहीं देख सकते हैं ।

उ: हम परमेश्वर को नहीं देख सकते हैं क्योंकि वह आत्मा है ।

६ प्र: आत्मा क्या है ।

उ: आत्मा ऐसा प्राणी है जिस का मांस और लोहू नहीं है ॥

७ प्र: परमेश्वर का आरंभ हुआ कि नहीं ।

उ: परमेश्वर सदा से हुआ और सदा रहेगा ॥

८ प्र: परमेश्वर क्या कर सकता है ।

उ: परमेश्वर बुराई छोड़के सब कुछ कर सकता है ॥

९ प्र: क्या परमेश्वर तुम को नित देखता है ।

उ: परमेश्वर मुझ को रात दिन देखता है ॥

१० प्र: क्या परमेश्वर तुम्हारे विषय में सब कुछ जानता है

उ: परमेश्वर मेरे सब काम देखते मेरे सब वचन सुनता और मेरे सब सोच बुझता है॥

११ प्र: परमेश्वर कैसा है।
उ: परमेश्वर महान बुद्धिमान, पवित्र, और भला है॥
१२ प्र: क्या परमेश्वर एकही है।
उ: केवल एकही परमेश्वर है॥
१३ प्र: आसमानी दूत कौन हैं।
उ: आसमानी दूत भले आत्मा हैं जो परमेश्वर
को सेवा में रहते हैं॥
१४ प्र: शैतान कौन है।
उ: शैतान और उस के दूत बुरे आत्मा हैं॥

उत्पत्ति और मनुष्य के विषय में।

१५ प्र: किस रीति से परमेश्वर ने सब कुछ उत्पन्न किया
उ: परमेश्वर ने अपनेही बचन से सब कुछ पैदा किया।
१६ प्र: क्या परमेश्वर सब की रखवाली करता है कि नहीं।
उ: परमेश्वर सब के ऊपर राज करके रखवाली करता
है॥
१७ प्र: पहिला मनुष्य और पहिली स्त्री कौन थी।
उ:पहिला मनुष्य आदम और पहिली स्त्री हव्वा थी॥
१८ प्र: मनुष्य के कौन से दो भाग है।
उ: मनुष्य के बदन और प्राण है॥
१९ प्र: परमेश्वर ने आदम का बदन कौन चीज से बनाया।
उ: परमेश्वरने मिट्टीसे आदम का बदन बनाया॥
२० प्र: मनुष्य का प्राण क्या है।
उ: मनुष्य का प्राण आत्मा है जो देह में रहती है।
२१ प्र: आत्मा क्या कर सकता है।
उ: आत्मा सोच कर सकता और भलाई और बुराई
के बीचमें बिचार कर सकता है॥

२२ प्र: किस लिये आत्मा बदन से भलो है।

उ: आत्मा बदन से भलो है क्योंकि वह अमर है॥

२३ प्र: किस के स्वारूपमें आदम बनाया गया।

उ: आदम परमेश्वर के स्वारूपमें पवित्र और आनन्दित बनाया गया।

२४ प्र: परमेश्वरने आदम और हव्वाको कहां रखा।

उ: परमेश्वरने आदम और हव्वाको अदन की बारीमें रखा॥

मनुष्य का पाप में पड़ना॥

२५ प्र: क्या आदम और हव्वा पवित्र हो रहे।

उ: आदम और हव्वा पापी हो गये॥

२६ प्र: पाप क्या है।

उ: परमेश्वर को आज्ञा न मानना सोही पाप है॥

२७ प्र: आदम और हव्वा ने कौन पाप पहिले किया।

उ: आदम और हव्वाने बरजे हुए फल खाया॥

२८ प्र: आदम और हव्वाने किस की परीछा से उस फल को खाया।

उ: शैतान ने सांपके रूपमें आदम और हव्वा को परिछा किई॥

२९ प्र: उस फल के खानेसे आदम और हव्वा कैसे बदल गये।

उ: आदम और हव्वा धर्म्म छोड़के पापी हो गये॥

३० प्र: आदम और हव्वाने इस जगत में पाप के लिये दुःख पाया कि नहीं।

उ: हां मिहनत बीमारी और मौत पापके लिये आये।

३१ प्र: आदम और हव्वा कौन दंडके योग्य रहे मरनेके पीछे
उ: आदम और हव्वा नरकके योग्य रहे ॥

सब लोग पापी है ।

३२ प्र: जन्म से लेके तुम्हारा मन कैसा हुआ ।
उ: जन्म से मेरा मन पापी हुआ ॥

३३ प्र: तुमने किस रीति से पाप किया है ।
उ: मन, बचन, और काममे मैंने पाप किया है ॥

३४ प्र: कौन लोग पापी है ।
उ: सब लोग जन्म से पापी है ॥

३५ प्र: तुम्हारा कोई काम भला है ।
उ: मेरे सब काम पापसे मिले हुए है ॥

३६ प्र: पाप का दंड क्या है ।
उ: मृत्यु पाप का जोग्य दंड है ॥

मुक्तिदाता के विषय में ।

३७ प्र: मनुष्य के मुक्तिदाता कौन है ।
उ: परमेश्वरका पुत्र प्रभु यीशु मसीह मनुष्यों का मुक्तिदाता है ॥

३८ प्र: हमारे मुक्तिके लिये यीशु मसीह ने क्या किया ।
उ: हमारी मुक्ति के लिये यीशु मसीह मनुष्य हुआ ॥

३९ प्र: यीशु मसीह ने किस रीति से जन्म लिया ।
उ: यीशु मसीह पवित्र आत्माके बलसे मरियम कुंवारीसे उत्पन्न हुआ ॥

४० प्र: यीशु मसीह दूसरों के समान पापी था कि नहीं ।
उ: यीशु मसीह निरदोष और बे पाप का था ॥

४१ प्र: यीशु मसीहने तीस बरसके होके क्या किया ।

उ: यीशु मसीहने उपदेश देने लगा ॥

४२ प्र: किस तरह यीशु मसीहने अपने उपदेशको साबित किया ।

उ: यीशु रोगियों को चंगा करने से और मुरदोंको जी उठानेसे अपने उपदेशको साबित किया ॥

४३ प्र: यीशु मसीह हमारे बदले में कौन सा दुःख उठाया ।

उ: यीशु हमारे बदले में मर गया ॥

४४ प्र: जो यीशु मसीह नहीं मरता तो सब मनुष्यपर क्या होता ।

उ: जो यीशु मसीह नहीं मरता तो सब मनुष्य नरक में डाले जाते ॥

४५ प्र: यीशु मसीह किस तरह मर गया ।

उ: यीशु क्रूसपर लटकाया गया ॥

४६ प्र: तीसरे दिन यीशुने क्या किया ।

उ: तीसरे दिन यीशु मृतकों मेंसे जी उठा ।

४७ प्र: इस के पीछे यीशु मसीह किधर गया ।

उ: यीशु आसमान को गया ॥

मुक्ति के मार्ग के बिषय में ।

४८ प्र: मुक्ति का एकही मार्ग क्या है ।

उ: मुक्ति का एकही मार्ग यीशु मसीह के द्वारा से है ॥

४९ प्र: यीशु मसीह कौन लोगको मुक्ति देगा ।

उ: जो लोग पापसे पछताके उसपर बिश्वास रखते हैं वह उनको मुक्ति देगा ॥

५० प्र: पछतावा क्या है ।

उ: पापके लिये उदास होके उसको छोड़ देना सोई पछतावा है ॥

५१ प्र: किसके साम्हने पापको मान लेना चाहिये ।

उ: परमेश्वर के साम्हने पापको मान लेना चाहिये ॥

५२ प्र: पापके लिये क्या मांगना चाहिये ।

उ: पापके लिये हमको क्षमा मांगना चाहिये ॥

५३ प्र: किस के नाम से सब कुछ मांगना चाहिये ।

उ: प्रभु यीशु मसीहके नामसे सब कुछ मांगना ॥

५४ प्र: मसीह पर बिश्वास रखना क्या है ।

उ: मसीहपर बिश्वास करना यह है कि मुक्तिके लिये केवल उसही पर भरोसा रखें ॥

५५ प्र: बिश्वासीका पाप कौन उठा ले जाता है ।

उ: प्रभु यीशु अपने बिश्वासियोंका पाप उठा ले जाता है ॥

५६ प्र: बिश्वास करने से हम किसके सब पुण पाते हैं ।

उ: बिश्वास करने से हम प्रभु यीशुका पुण पाते हैं ॥

५७ प्र: किसकी सहायता से हम पछतावा और बिश्वास कर सकते हैं ।

उ: परमेश्वर के पवित्र आत्माकी सहायता से हम पछताना और बिश्वास कर सकते हैं ॥

५८ प्र: पवित्र आत्मा की सहायता हमें किस रीति से मिल सकते हैं ।

उ: जो हम मांगें तो परमेश्वर हमें पवित्र आत्मा देगा ॥

५९ प्र: सच्चे बिश्वासी किस रीति से पहिचाने जाते हैं ।

उ: सच्चे बिश्वासी मसीहकी आज्ञा मानने से जाने जाते ॥

६० प्र: परमेश्वरको किस रीति से प्रेम करना चाहिये ।

उ: परमेश्वरको अपने सारे मनसे प्रेम करना चाहिये ॥

६१ प्र: किस को पूजा करना चाहिये ।

उ: केवल एकही परमेश्वर को पूजा करना चाहिये ॥

६२ प्र: मूरत पूजनेवालों के देवते कैसे हैं ।

उ: मूरत पूजनेवालोंके देवते केवल गूंगे हैं ॥

६३ प्र: क्या हम मूरतको पूजा करें कि नहीं।
उ: नहीं, मूरत पूजा महा पाप है॥

६४ प्र: हमको सुघड़ी और सुगुन पूछना चाहिये कि नहीं।
उ: सुघड़ी और सुगुन पूछना पाप और मूर्खताई है॥

६५ प्र: जब तुम बिमार पड़ते तो किस की सहायता मागना चाहिये।
उ: बिमारी में परमेश्वरकी सहायता मांगना चाहिये॥

६६ प्र: परमेश्वर का नाम किस रीति से लेना।
उ: परमेश्वर का नाम बेफाइदा न लेना॥

६७ प्र: बिश्रामका दिन किस रीति से रखना चाहिये।
उ: बिश्रामवार पवित्र रखना चाहिये॥

६८ प्र: किस लिये बिश्रामवार हफ्तेका पहिला दिन है।
उ: इस लिये कि उस दिन यीशु मसीह मृतकों में से जी उठा।

६९ प्र: औरों को किस रीति से प्रेम करना चाहिये।
उ: अपने समान औरों को प्रेम करना चाहिये॥

७० प्र: क्या परमेश्वरने मनुष्यों को अलग २ जाति बनाई कि नहीं
उ: नहीं परमेश्वरने सब मनुष्योंको एकही लोहूसे बनाया।

७१ प्र: मा बाप की ओर हम को क्या करना चाहिये।
उ: मा बापको प्यार करना और मानना चाहिये॥

७२ प्र: क्या किसी हुकम पर बुराई करना
उ: जो मा बाप से वा और किसी से बुराई करने का हुकम पावें तो न मानना॥

७३ प्र: क्या झगड़ और लड़ाई करना अच्छी है कि नहीं।
उ: झगड़ा और लड़ाई करना बहुत बुरी हैं॥

७४ प्र: जो लोग तुम पर बुड़ाई करें तो उनपर क्या करना।

उ: बुराई के बदले में भलाई करना॥

७५ प्र: क्या बुरे बचन बोलना उचित है।

उ: बुरे बचनों से परमेश्वर बहुत क्रोधित होता है॥

७६ प्र: कौन सी चिज़ों को न लेना।

उ: जो मेरा नहीं है सो न लेना॥

७७ प्र: क्या झूठ बोलना कभी उचित है।

उ: नहीं सदा सत्य बोलना चाहिये॥

७८ प्र: सब झूठ बोलनेहारों का भाग कहां होगा।

उ: सब झूठ बोलनेहारोंका भाग नरक कुंडमें होगा॥

७९ प्र: कौन सी चीजों का लालच न करना।

उ: दूसरों की चीज़ों का लालच न करना॥

८० प्र: क्या दसतूर पर चलना कि नहीं।

उ: जो दसतूर अच्छा होवे तो उस पर चलना जो बुरा होवे तो उसको छोड़ देना॥

प्रार्थना और सुसमाचार के फैलानेके बिषय में।

८१ प्र: कम से कम कितनी बेर प्रार्थना करना चाहिये।

उ: निश्चय करके सबेरे और सांझ को प्रार्थना करना॥

८२ प्र: क्या अनएक मत हैं जिस से हमको मुक्ति मिलेगा।

उ: केवल प्रभु यीशुके धर्म्म से हमको मुक्ति मिलेगा।

८३ प्र: किस चाल चलन से हम यीशुका धर्म्म फैला सकते हैं।

उ: हम लोग अच्छे चाल चलनसे यीशुके धर्म्म फैलाने की सहायता कर सकते हैं॥

८४ प्र क्या हम और काम कर सकते हैं सुसमाचार फैलनेको

उ: हम औरों को यीशुका धर्म्म सिखलावें और उस के फैलाने के लिये प्रार्थना कर सकते हैं।

मृत्यु और बिचार के दिन के विषय में।

८५ प्र: मरने के पीछे तुम्हारा आत्मा कहां जायगा।
उ: मरनेके पीछे मेरा आत्मा आसमान में वा नरक में जायगा॥

८६ प्र: पीछले दिन में सब मनुष्यों का न्याय कौन करेगा।
उ: पीछले दिनमें प्रभु यीशु सब मनुष्योंका न्याय करेगा॥

८७ प्र: नरक में कौन डाले जायेंगे।
उ: दुष्ट लोग और सब जो परमेश्वर को भुल जाते हैं नरक में डाले जायेंगे॥

८८ प्र: नरक कैसा स्थान है।
उ: नरक अत्यन्त दुःख का स्थान है॥

८९ प्र: धर्म्मी लोग कहां जायेंगे।
उ: धर्म्मी लोग परमेश्वर के संग सदा रहेंगे॥

९० प्र: आनन्दित होने के लिये क्या ढूंढ़ना चाहिये।
उ: नरकसे बचने और स्वर्गमें जाने को ढूंढ़ना चाहिये॥

भोर की प्रार्थना।

हे प्रभु आजके दिन अपनी आशीष मुझे दे, मेरी रखवाली कर, और मुझे सब पाप से बचा। यह मैं प्रभु यीशुके नाम से मांगता हूं। आमीन॥

सांझ की प्रार्थना।

हे प्रभु इस रात में मुझपर दृष्टि कर और मेरे सब पापों को क्षमा कर और मुझे अच्छा लड़का बना। यह मैं प्रभु यीशु के नाम से मांगता हूं। आमीन॥

भोजन करने से पहिले

हे परमेश्वर मेरे भोजन के साथ अपना आशीष दे और मुझे को बुराई से बचा। प्रभु यीशु के नाम से। आमीन॥

